₹ 30/-

साहित्य अमृत

मार्च 2021 • साहित्य एवं संस्कृति का संवाहक • मासिक • ISSN 2455-1171

साहित्य अमृत

मासिक

फाल्गुन-चैत्र, संवत्-२०७७ ❖ मार्च २०२१

वर्ष-२६ ❖ अंक-८ ❖ पृष्ठ ९२ | यू.जी.सी.-केयर लिस्ट में उल्लिखित | ISSN 2455-1171

संस्थापक संपादक
पं. विद्यानिवास मिश्र

निवर्तमान संपादक
डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी
श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी

संस्थापक संपादक (प्रबंध)
श्री श्यामसुंदर

प्रबंध संपादक
पीयूष कुमार

संपादक
लक्ष्मी शंकर वाजपेयी

संयुक्त संपादक
डॉ. हेमंत कुकरेती

उप संपादक
उर्वशी अग्रवाल 'उर्वी'

कार्यालय
४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-०२
फोन : ०११-२३२८९७७७
०८४४८६१२२६९
इ-मेल : sahityaamrit@gmail.com

शुल्क
एक अंक—₹ ३०
वार्षिक (व्यक्तियों के लिए)—₹ ३००
वार्षिक (संस्थाओं/पुस्तकालयों के लिए)—₹ ४००
विदेश में
एक अंक—चार यू.एस. डॉलर (US$4)
वार्षिक—पैंतालीस यू.एस. डॉलर (US$45)

प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी पीयूष कुमार द्वारा ४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित एवं न्यू प्रिंट इंडिया प्रा.लि., ८/४-बी, साहिबाबाद इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-IV, गाजियाबाद-२०१०१० द्वारा मुद्रित।

साहित्य अमृत में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

✍ संपादकीय
महिला सशक्तीकरण : नए क्षितिज ४

✍ प्रतिस्मृति
सरिता हो मेरा जीवन/ *महादेवी वर्मा* ६

✍ कहानी
दृष्टि/ *प्रीति गोविंदराज* ८
नहीं चाहिए बेटी/ गिरीश पंकज ३४
परी नहीं होती'''/ *मीनू त्रिपाठी* ४९
लालसा/ *सुरेश मीना* ६२
विभागीय/ *मनीष कुमार मिश्रा* ६८
'''कि तुम मेरी जिंदगी हो/ *पूरन सिंह* ८३

✍ आलेख
आचार्य महाप्रज्ञ का कवि रूप/ *नरेश शांडिल्य* १४
गांधी-चिंतन और भारतीय समाज/ *राजीव गुप्ता* ३०
ऑस्टिन (टेक्सास) की उल्लासपूर्ण होली/ *हरि जोशी* ४०
सांप्रदायिक निर्वाचन प्रणाली/ *चितरंजन भारती* ४२
महिला-साहित्य का प्रस्थान बिंदु : ऋग्वेद की ऋषिकाएँ/ *जीनत आबेदीन* ७३

✍ लघुकथा
आमने-सामने / *ओमप्रकाश शर्मा 'प्रकाश'* २६
तिरस्कार एवं सम्मान/ *माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग'* ६३
कितने रूप दहेज के/ आर.बी. भंडारकर ७१

✍ कविता
कुछ मैंने सुना/ *विनोद शर्मा* १३
गगन गुलाल मलता है'''/ *व्यासमणि त्रिपाठी* २७
फागुन आया/ *इंद्रा रानी* ३२
किस बात पर बातें करें/ *रवि ऋषि* ३९
है तेरा आसमान खतरे में/ *अशोक अंजुम* ५२
क्यों नहीं पूछा ?/ *रेणु राजवंशी गुप्ता* ६७
धूम मची धूम, होली की धूम/ *विष्णु भट्ट* ७२
रूबरू/ प्रीति कच्छल ७९
एक चेहरे का आदमी/ निलोत्पल रमेश ८०

✍ लोक-साहित्य
फागुन, फाग, राग और कवि ईसुरी/ *शिवचरण चौहान* ६४

✍ राम झरोखे बैठ के
बुद्धिजीवी उदास क्यों हैं ?/ *गोपाल चतुर्वेदी* १७

✍ संस्मरण
साझी संस्कृति की समृद्ध धरोहर : जापान/ *ऋचा मिश्र* ५८

✍ शोध-पत्र
छत्तीसगढ़ी साहित्य में धर्म व अध्यात्म/ *नम्रता पांडेय* ५३

✍ साहित्य का भारतीय परिपार्श्व
'तुळु' भाषा की दो कविताएँ/ *एच.एम. कुमारस्वामी* २८

✍ विनोद-वार्ता
हास्यकवि की फागुनी बाइट/ सूर्यकुमार पांडेय ३३

✍ साहित्य का विश्व परिपार्श्व
उसकी पहली उड़ान/ *सुशांत सुप्रिय* ५६

✍ यात्रा-संस्मरण
राजस्थान के तीर्थ-दर्शन/ प्रेमपाल शर्मा २०

✍ बाल-संसार
होली का त्योहार/ *हरदेव सिंह धीमान* ७६
दादी बदल गई/ *आशा शर्मा* ७८

✍ वर्ग-पहेली ८७
✍ पाठकों की प्रतिक्रियाएँ ८८
✍ साहित्यिक गतिविधियाँ ८९

साझी संस्कृति की समृद्ध धरोहर : जापान

• ऋचा मिश्र

ऐसा अमूमन क्यों होता है कि कल्पना यदि मूर्तिमान होने लगती है तो चमत्कार पर विश्वास सा हो जाता है। २०१० में एक क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन में पहली बार टोक्यो और ओसाका जाने का शुभ अवसर भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा मिला। दोनों नगरों के विश्वविद्यालयों में हिंदी सम्मेलन एक साथ आयोजित किए गए, जिनमें भाग लेने वाले जापानी विद्यार्थियों की संख्या और हिंदी में उनकी प्रस्तुतियों के स्तर ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया। उसी क्षण मैंने निर्णय लिया कि भविष्य में यदि कभी मुझे जापान में हिंदी शिक्षण का अवसर मिला, तो मैं अवश्य उसका लाभ उठाऊँगी। २०१७ में मुझे भाग्य से यह मौका मिला। टोक्यो के 'विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय' में हिंदी शिक्षिका के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान मुझे जापान के गौरवपूर्ण इतिहास, कला, संस्कृति और जगह-जगह बिखरे हुए भारतीय सांस्कृतिक प्रतीकों के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव को समझने और देखने का मौका मिला।

भारतीय संस्कृति का पहला परिचय टोक्यो एयरपोर्ट से बाहर निकलते ही हमारे अतिथि जापानी प्रोफेसर के इस विनोदपूर्ण वाक्य से हुआ, "तो चलें लक्ष्मीनगर?" मैं आश्चर्य और हास्य मिश्रित अपनी प्रतिक्रिया को बड़ी मुश्किल से रोक पाई। 'यहाँ लक्ष्मीनगर!' इससे पहले कि मेरा वाक्य पूरा होता, वह ठहाका लगाते हुए बोले, "जी आपका जापानी घर किचीजोजी में है।" किचीजोजी जापानी में लक्ष्मीजी को कहते हैं। सुनते ही उस क्षेत्र की अनेक काल्पनिक आकृतियाँ बनने बिगड़ने लगीं। पूरा रास्ता इस सुखद अहसास के साथ निकल गया कि हम अपनों के बीच अपनापन बटोरने जा रहे हैं।

भारत और जापान के बीच शताब्दियों पुराने मैत्री संबंधों और बौद्ध धर्म, दर्शन, आचार विचार, तथा संस्कृति के पारस्परिक साझे प्रतीकों से परिचय तो पुराना था, किंतु उसमें सांस लेने और भीतर तक सराबोर होने का मौका पहली बार मिला। भारतीय संस्कृति ने वर्षों पहले तिब्बत, चीन और कोरिया के रास्ते आए बौद्धधर्म के द्वारा जापान में दस्तक दी होगी, ऐसा इतिहासवेत्ता मानते हैं। इस मार्ग से महायान शाखा का

सुपरिचित लेखिका। चार पुस्तकें तथा अनेक शोधपरक लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। हिंदी में स्नातक एवं स्नातकोत्तर उपाधियाँ पाँच स्वर्ण पदक। अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों में भागीदारी।

प्रवेश जापान में संभवत: छठी शताब्दी में हुआ, जिसमें कुछ बौद्ध ग्रंथों तथा अन्य प्रतीकों को यहाँ लाया गया। सातवीं शताब्दी तक बौद्ध धर्म जापान में रच बस चुका था। हीयेन काल के दो जापानी बौद्ध संप्रदायों टेंडाई तथा शिन्गोन की सूचना भी मिलती है, जो काफी प्रभावशाली थे। धीरे-धीरे बौद्ध धर्म की अन्य शाखाएँ, जैसे वज्रयान और उनसे संबंधित बोधिसत्त्व के आकारों, प्रार्थना पद्धतियों, संबंधित काल्पनिक कथाओं, दैत्यों और दानवों की आकृतियों ने जापान के जनमानस में अपना स्थान बनाया और माना जाता है कि कामाकुरा काल (११ से १३वीं शताब्दी) तक आते-आते यह जापानी समाज के सभी वर्गों में लोकप्रिय हो चुका था। आज का जापान यद्यपि अत्याधुनिक विकसित सुविधा-संपन्न समाज है, लेकिन अपने गौरवशाली इतिहास की धरोहर को संजोकर रखे हुए हैं। हिंदी कक्षा के अपने विद्यार्थियों, कभी सहयोगी शिक्षकों, पड़ोसियों से अनौपचारिक चर्चा के दौरान धीरे-धीरे इस धरोहर के कई खजाने खुलते गए। ज्ञात हुआ कि महात्मा बुध की विशाल आकृतियों, ध्यान और साधना की विभिन्न अवस्थाओं, हस्त मुद्राओं, प्राचीन सिद्ध लिपि, और यहाँ तक कि हस्त निर्मित वस्तुओं की बाँधनी कला (शिबोरी) पर भी भारतीय संस्कृति की अमिट छाप दिखाई देती है, यद्यपि आज जापानी समाज की निजी विशेषताओं में रँगकर स्थानीय ही समझी जाती है। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि संस्कृति के प्रतीकों का स्थानांतरण दो संस्कृतियों के संगम से नया रूपाकार ग्रहण कर ही लेता है।

इसका पहला प्रमाण हमारे निवास के पास स्थित जेनपुकुजी उद्यान में स्थित लक्ष्मी मंदिर में लक्ष्मीजी की प्रतिमा को देखकर हुआ, जिसमें